उभरते बाजारों में घटेगी अस्थिरता

निवेश गुरू मार्क मोबियस ने कहा, उभरते बाजारों को नहीं किया जा सकता दरकिनार, फेडरल रिजर्व की ब्याज बढ़ोतरी नहीं होगी परेशान करने वाली

बीएस संवाददाता
मुंबई, 17 नवंबर

टेम्पलटन इमर्जिंग मार्केट्स ग्रुप के कार्यकारी चेयरमैन मार्क मोबियस ने कहा है कि इस साल उभरते बाजारों में हो रहे उतारचढ़ाव कम होने की संभावना है और अमेरिकी फेडरल रिजर्व की तरफ से ब्याज दरों में बढ़ोतरी का असर परेशान करने वाला नहीं होगा।

निवेश गुरू और उभरते बाजारों के विशेषज्ञ ने अपने हालिया ब्लॉग में लिखा है, हम मान रहे हैं कि उभरते बाजारों में उतारचढ़ाव के लिए जिम्मेदार कई चीजें अस्थायी होंगी। ऐसे में हमारा मानना है कि लंबी अवधि के लिहाज से आशावादी होने की वजह है।

पिछले साल की बेहतरी की बाद ज्यादातर उभरते बाजारों के शेयरों ने चीन की अगुआई में वैश्विक मंदी के डर और अमेरिकी फेडरल रिजर्व की तरफ से ब्याज दरों में इजाफे की संभावना से इस साल अब तक नकारात्मक रिटर्न दिया है। ज्यादातर उभरते बाजारों ने विकसित बाजारों से बेहतर प्रदर्शन किया है। उदाहरण के लिए भारत, इंडोनेशिया और ताइवान के बाजार क्रमशः 6 फीसदी, 14 फीसदी और 10 फीसदी नीचे हैं। उधर, फ्रांस, जर्मनी और जापान जैसे विकसित बाजारों में इस साल 10-10 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज हुई है। मोबियस ने कहा, अल्पावधि के लिहाज से निवेशकों के सेंटिमेंट में बदलाव के बाद भी उभरते बाजारों को हम दरकिनार नहीं कर सकते। ये अभी वैश्विक आबादी, जीडीपी और इक्विटी बाजार पूंजीकरण के लिहाज से वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मोबियस ने कहा, हमें उभरते बाजारों में किसी तरह का संकट नजर नहीं आ रहा है और ज्यादातर एशियाई अर्थव्यवस्थाएं बेहतर हैं, जैसा कि वे ऐतिहासिक तौर पर रहे हैं। उन्होंने कहा, जीडीपी के प्रतिशत के तौर पर विदेशी रिजर्व और सार्वजनिक ऋण सामान्य तौर पर बेहतर स्तर पर नजर आ रहे हैं और कुल मिलाकर जीडीपी की बढ़त की रफ्तार विकसित बाजारों के लिए ज्यादा मजबूत रही है। विस्तृत तौर पर हमें उभरते बाजारों में इक्विटी में किसी तरह का संकट नजर नहीं आ रहा है। अपने ब्लॉग में मोबियस ने लिखा है, दो चीजें उभरते बाजारों को प्रभावित कर रही हैं, फेडरल रिजर्व और चीन। उन्होंने कहा, अमेरिदी दरों में संभावित बढ़ोतरी पर बाजार ने जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया जताई है।

उन्होंने कहा, अगर फेडरल रिजर्व आक्रामक तरीके से दरें बढ़ाता है तो यह उभरते बाजारों के लिए नकारात्मक होगा, हालांकि ऐसा परिदृश्य नजर नहीं आ रहा है। चीन की मंदी के डर पर मोबियस ने निवेशकों के लिए इसे निराधार बताया। मोबियस ने कहा कि उभरते बाजार विश्व की बढ़त की रफ्तार का इंजन बने रहेंगे और सवाल यह नहीं है कि उनमें कहां निवेश किया जाना चाहिए, लेकिन सवाल यह है कि किस बाजार में निवेश किया जाना चाहिए। मोबियस ने कहा, प्राइस अर्निंग व प्राइस-बुक रेश्यो के आधार पर अभी विकसित बाजारों के मुकाबले उभरते बाजारों का मूल्यांकन कम है। स्पष्ट तौर पर कई उभरते बाजार अवरोध का सामना कर रहे हैं, लेकिन मेरा मानना है कि वहां हमेशा मौके तलाशे जा सकते हैं। मोबियस ने भारत का उदाहरण देते हुए कहा कि एशियाई अर्थव्यवस्था बेहतर स्थिति में है। उन्होंने कहा, भारत अभी आर्थिक नजरिये से काफी मजबूत है। भारत का 185 अरब डॉलर का वाणिज्यिक कर्ज प्रबंधन करने लायक है। चालू खाते का घाटा 88 अरब डॉलर से घटकर 20 अरब डॉलर के नीचे चला गया है, विदेशी मुद्रा भंडार अब 10 महीने के आयात के बराबर है जबकि पहले यह सात महीने के बराबर था। साथ ही प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का परिदृश्य नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद सुधरा है।

निवेश गुरु मार्क मोबियस ने यह कहा

- उभरते बाजारों में उतार-चढ़ाव के लिए जिम्मेदार कई चीजें अस्थायी होंगी
- ज्यादातर उभरते बाजारों के शेयरों ने दिया नकारात्मक प्रतिफल
- चीन की अगुआई में वैश्विक मंदी के डर और फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों में इजाफे के आसार का असर